खालसा सृजन दिवस (बैशाखी) पर आयोजित कार्यक्रम में

माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया क अभिभाषण का प्रारूप

दिनांक 13 अप्रैल 2024, शनिवार	**समय : 01.00 PM**	**स्थान : गोपीनाथ नगर, गुवाहाटी**

नमस्कार!

सर्वप्रथम आप सभी को बैशाखी और खालसा सृजन दिवस की बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं।

इस पावन पर्व के अवसर पर इस भव्य और सुंदर गुरुद्वारे में आप सभी के बीच उपस्थित होकर बहुत प्रसन्नता हो रही है। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे इस पवित्र गुरुद्वारे में पहली बार मत्था टेकने का अवसर प्राप्त हुआ। इसके लिए मैं "गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा" को हार्दिक धन्यवाद देता हूं।

साथ ही यहां उपस्थित सभी लोगों का अभिनन्दन करता हूं तथा कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए आयोजकों को शुभकामनाएं देता हूं।

देवियो और सज्जनो,

हमारा भारत उत्सवधर्मी राष्ट्र है। इसका बहुरंगी सौंदर्य व जीवंतता हमारे पर्व और संस्कृति में निहित है। हमारे कई पर्व और त्योहार प्रकृति और ऋतु चक्र परिवर्तन से जुड़े हैं। हमारे इन विविध पर्व-त्योहारों का सामाजिक, सांस्कृतिक व आध्यात्मिक महत्व है, जो हमारी संस्कृति की उत्कृष्टता के परिचायक हैं।

"बैसाखी" ऐसा ही एक प्रकृति पर्व है। इस पर्व पर सरल, श्रमनिष्ठ व उल्लासमय कृषि जीवन की झलक दिखाई देती है, जो अपने आप में अनूठी है। हम सभी जानते हैं कि कृषि का काम अत्यंत परिश्रम वाला होता है। नौकरी व व्यवसाय करने वाला वर्ग सिर्फ स्वयं व स्वयं के परिवार तक सीमित रहता है, जबकि किसान अनेक विषम परिस्थितियों से जूझते हुए पूरे देशवासियों का पेट भरने के लिए अन्न उगाते हैं। इसलिए हमारी संस्कृति में किसान को "अन्नदाता" कहा जाता है।

यह अजब हास्यास्पद है कि एक ओर अंग्रेजी कैलेंडर के अप्रैल महीने की शुरुआत मूर्ख दिवस से होती है, वहीं इसी अप्रैल में पड़ने वाले हिंदी माह बैसाख की शुरुआत त्याग, बलिदान की प्रेरणा देने वाले बैसाखी पर्व से होती है। यह पर्व देश में अलग-अलग नामों से मनाया जाता है। असम में इसे रंगाली बिहू, केरल में "विशू", बंगाल में "नव वर्ष", तमिलनाडु में "पुथंडू" तथा उत्तराखंड व बिहार में "वैशाख पर्व" के नाम से मनाया जाता है।

बैसाख माह में कृषि का यह उत्सव तब मनाया जाता है, जब खेतों में गेहूं पक जाता है और पकी हुई फसल को काटने की शुरुआत हो जाती है। बैसाखी के दिन सूर्यास्त के उपरांत किसान नए अन्न अग्निदेव को अर्पित करते हैं और उनसे अगली फसल की अच्छी पैदावार की कामना करते हैं। रंग-बिरंगे पारम्परिक परिधानों में सिख समाज के लोग, जब ढोल व नगाड़ों की ताल पर "भांगड़ा" करते हैं तो इस कृषि उत्सव का जोश व रौनक बढ़ जाता है।

देवियो और सज्जनो,

सिख धर्म में बैसाखी का पर्व केवल कृषि उत्सव के रूप में नहीं मनाया जाता, बल्कि खालसा सृजन दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। सन् 1699 में बैसाखी के दिन ही दसवें गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज ने केशवगढ़ आनंदपुर साहिब (पंजाब) की धरती पर "खालसा पंथ" की बुनियाद डाली थी। उन्होंने खालसा पंथ की स्थापना कर श्री गुरु नानक देव जी महाराज के निर्मल पंथ को एक नई दिशा प्रदान की थी।

खालसा पंथ की स्थापना सिख धर्म के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना है। गुरु गोबिंद सिंह जी ने निर्दोषों को धार्मिक उत्पीड़न से बचाने और धर्म व न्याय की रक्षा के लिए खालसा पंथ की आधारशिला रखी थी। खालसा की स्थापना से सिख परंपरा में एक नया चरण शुरू हुआ। इसने सिख समुदाय के लिए एक राजनीतिक और धार्मिक दृष्टिकोण भी प्रदान किया।

वास्तव में खालसा पंथ के निर्माण के पीछे **गुरु नानक दव जी** का, सतनाम का गुरुमंत्र, सत्यता और एकता की भावना, ईश्वर भक्ति का संदेश, मानव को सत्य पथ पर चलने का आदेश, **गुरु आनंद दव जी** की सेवा, शालीनता और संतोष का उदाहरण, **गुरु अमरदास जी** की गुरु महिमा से उसके सत्य रूप का प्रतीक, **गुरु नामदास जी** की संगत-पंगत की व्यवस्था, **गुरु अर्जुनदव जी** के सत्य के प्रति बलिदान और नम्रता, **गुरु हरिगोबिंद जी** की ललकार, **गुरु हर राय जी** का गुरु घर में आए को आशीर्वाद, **गुरु हरिकृष्ण जी** द्वारा गरुगद्दी की प्रतिष्ठा में अचल लीला, **गुरु तगबहादुर जी** देश और सनातन धर्म की रक्षा में दिल्ली के चाँदनी चौक में अपना सिर देकर नई परंपरा का प्रकाश है।

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने ख़ालसा पंथ की रचना करके लोगों में यह विश्वास उत्पन्न किया कि वे लोग एक ईश्वरीय कार्य को पूरा करने के लिए उत्पन्न हुए हैं।

देवियो और सज्जनो,

सिख अनुयायियों को खालिस बनाने की यह घटना मध्ययुग की एक अत्यंत क्रांतिकारी व आध्यात्मिक घटना मानी जाती है।

उस समय भारतवर्ष में बर्बर मुगल आक्रान्ता औरंगजेब का शासन था और देश के हिन्दू उस धर्मांध बादशाह की क्रूरता व अत्याचारों से बुरी तरह आतंकित थे। इस अन्याय का विरोध करने के लिए बैसाखी के शुभ दिन गुरु गोविन्द सिंह ने स्वधर्म और स्वराष्ट्र की रक्षा के लिए अलग-अलग जातियों, धर्मों और क्षेत्रों से चुनकर पंच प्यारों को अमृत पिलाया और पाँच ककार **कच्छ, कड़ा, कृपाण, केश** तथा **कंघा** धारण करना उनके लिए अनिवार्य बनाया। उन्होंने लोगों को पंथ व जाति के आधार पर भेदभाव छोड़कर मानवीय भावनाओं को महत्व देने की दृष्टि दी।

उन्होंने एक नया जयघोष दिया-

वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतह।

इसका अर्थ है कि खालसा ईश्वर का है और ईश्वर की विजय सुनिश्चित है।

खालसा का पहला धर्म है कि देश मानव जाति की रक्षा के लिए तन-मन-धन सब कुछ न्यौछावर कर दे। निर्धनों, अनाथों तथा असहायों की रक्षा के लिए आगे रहे।

मानवता की रक्षा के लिए अपने अनुयायियों के एक हाथ में माला और दूसरे हाथ में तलवार पकड़ाकर संत और सिपाही के समन्वय की गुरु गोबिंद सिंह का परिकल्पना सचमुच अद्भुत है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में

"खालसा में गुरुजी न अलौकिक शक्ति संचार किया और उपदश दिया कि ख़ालसा में ऊँच-नीच कोई नहीं, सब एक स्वरूप हैं।

सतगुरु ने ख़ालसा सजाकर अमृत प्रचार की एक अनोखी प्रथा चलाई। अमृत प्रचार द्वारा राष्ट्रीय संगठन पैदा किया तथा एक परमात्मा की उपासना का उपदेश दिया। गुरु देव का यह लोकतांत्रिक नाम संसार के इतिहास में असाधारण तथा अलौकिक है।"

बैसाखी पर्व का एक अन्य संदर्भ स्वतंत्रता आंदोलन की एक अन्य अविस्मरणीय तिथि से भी जुड़ा है। 13 अप्रैल 1919 को बैसाखी पर्व के दिन अमृतसर में जलियांवाला बाग नरसंहार हुआ था। कहा जाता है कि इसी बैसाखी के दिन भगत सिंह ने सर्वप्रथम सार्वजनिक तौर पर **"मश्ा रंग द□बसंती चोला"** गाया था।

यह कहना अनुचित न होगा कि बैसाखी पर्व ने आजादी के पहले अंग्रेजी दासता के विरुद्ध समस्त देशवासियों को लामबंद किया था। इस दृष्टिकोण से भी बैसाखी का पर्व बहुत महत्वपूर्ण है।

सिखों के इतिहास और उनके बलिदानों को याद किए बिना हमारे देश का इतिहास अधूरा है। उन बलिदानों के कारण ही हमारी परंपरा और हमारा देश सुरक्षित है। आज, गुरुओं को श्रद्धांजलि देना और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना, एक तरह से युवा पीढ़ी को सिख गुरुओं के बारे में जागरूक करता है। खालसा पंथ जीवन शैली को एक दिशा देता है और आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

मुझे खुशी है कि पिछले 120 वर्षों से गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा उत्साह के साथ बैसाखी और खालसा सृजन दिवस का पर्व मना रहा है। आशा करता हूं कि संस्था भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित करती रहेगी ताकि हमारे गुरुओं के विचारों, आदर्शों, राष्ट्रभक्ति, सिखों के त्याग और बलिदान तथा हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को युवा पीढ़ी तक पहुंचाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता रहेगा।

मुझे बताया गया है कि गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा की बागडोर बीबी कवल कौर जी के नेतृत्व में समाज की महिलाओं के हाथों में है। 22 फरवरी 2024 को इस महिला समिति का गठन हुआ है। यह जानकर खुशी हुई कि विश्व के इतिहास में किसी गुरुद्वारे का संचालन करने वाली पहली महिला संस्था है। यह हमारे देश में महिला सशक्तिकरण का अद्भुत उदाहरण है। मैं बीबी कवल कौर और उनकी पूरी टीम को बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं देता हूं।

पुनः आप सभी को बैसाखी पर्व और खालसा सृजन दिवस की हार्दिक बधाई और कार्यक्रम की सफलता के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

इस नारे के साथ मैं अपने शब्दों को विराम देना चाहूंगा-

वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतह।

धन्यवाद।

जय हिन्द।